प.पू. काकाश्री विजयदिन विशेषांक

भगवत् कृपा

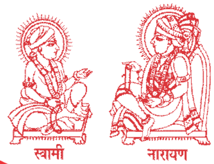

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 19 अंक : 3 | मंगलवार, 26.3.1996 | वार्षिक चंदा : 50.00

अहोहो ! धरती पर श्रीजी का अवतरण.........

रामनवमी का मंगलकारी दिन....दिस दिन साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण ने धरती पर मानवस्वरुप में अवतरित होकर समग्र पृथ्वी को सदा सनाथ किया....अयोध्या के निकट छपैया गांव में धर्मदेव और भक्ति माता के यहां प्रगट होकर संकेत दिया कि जहां धर्म हैं, वहां भक्ति है और जहां भक्ति है, वहां भगवान हाजराहजूर हैं.......

और.....भगवान स्वामिनारायण ने तो जीवों के कल्याण हेतु ऐसे ब्रह्मस्वरुप संतों द्वारा अपना प्रकटपन अखंडित रखा है....खूब धन्यता की बात है कि प्रभु ने अपनी परम्परा अखंडित रखकर देह रहते ही अक्षरधाम का सुख खूब सुलभ कर दिया। तभी तो मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की पहले प्रकरण की पहली बात में ही लिखा है-**'भगवान और साधु की महिमा की बातें निरंतर करनी और सुननी व महाराज तो स्वयं का अक्षरधाम व पार्षद तथा स्वयं का समग्र ऐश्वर्य लेकर पधारे हैं और वे वैसे के वैसे हैं तथा देह छोड़कर जिन्हें पाना है, वे आज देह रहते हुए ही मिले हैं। कुछ बाकी नहीं है। ऐसा नहीं समझते सो जीव में दुर्बलता रहती है और यदि यह समझ लें, तो जीव में कभी दुर्बलता लगेगी ही नहीं एवं जीव दूसरे प्रकार का हो जाता है। अतः महिमा समझने जैसा श्रेष्ठ कोई साधन नहीं है। इसके अतिरिक्त कितने ही साधन करो, पर जीव बल को नहीं पाएगा। ऐसी महिमा समझने का कारण तो ऐसे भगवदी का प्रसंग है, वर्ना तो ऐसी महिमा समझ में आएगी ही नहीं।'**

श्रीजी महाराज धरती पर 49 साल ही रहे, लेकिन बहुत भव्य कार्य किये...आईए, महाराज के प्रागट्य दिन पर महाराज की धर्म के प्रति विशाल उदारता, उस समय महाराज द्वारा कराए गए अनुभव और भक्तों के जीवन में महाराज के अद्भुत प्रसंगों को निहारें, जिससे महाराज की सच्ची महिमा और हमें गुणातीत परम्परा में मौज में मिले गुणातीत स्वरुपों की जो गोद मिली है उस भव्य प्राप्ति का भी ख्याल आएगा..... आईए, रामनवमी के परम पवित्र अवसर पर इन प्रसंगों का मनन् चिंतन करके स्वयं को धन्य करें.......

मिनारा मस्ज़िद के इमाम साहेब

एक बार महाराज भुज पधारे। उनकी मनोहर मूर्ति के दर्शन करने से वहां की मिनारा मस्ज़िद के इमाम साहेब को इनके प्रति ख़ुदा के रुप में आकर्षण हुआ। महाराज रोज सुबह वहां से निकल कर हमीरसर में स्नान करने जाते। महाराज की खड़ाऊ की मधुर ध्वनि सुनकर इमाम साहेब के हृदय में सुख की ध्वनि बजती। जब तक महाराज की खड़ाऊ की आवाज सुनाई बंद नहीं होती, तब तक इमाम साहेब झरोखे में खड़े रहते और फिर तो सारा दिन मन में वही मधुर ध्वनि उन्हें सुनाई पड़ती रहती। उस समय महाराज भुज में एक महिना रुके थे। सो, महाराज की खड़ाऊ की आवाज सुनने का मौका इमाम साहेब को लगातार एक महिने तक मिला। स्वामिनारायण प्रभु-वे साक्षात् ख़ुदा ही हैं-यह प्रतीति उनके अंतर में दिन-प्रतिदिन दृढ़ होने लगी। और.....उन्होंने महाराज के लिए चांदी के घुंघरु वाली खड़ाऊ बनवाई।

सभी के अंतर का जानने वाले सर्वज्ञ महाराज उस पाक मुसलमान के हृदय के भक्तिभाव को पहचान गए और आखिरी दिन जब वे जाने वाले थे, उस दिन प्रसन्न होकर, इमाम साहेब से सामने से ही खड़ाऊ मांगकर ग्रहण करी। वह पवित्र व्यक्ति तो खुशखुशहाल हो गया और अंतकाल में प्रभु लेने आए-ऐसा आशीर्वाद मांग लिया। वर्षों के बाद जब मिनारा मस्ज़िद के इमाम साहेब का देह छोड़ने का समय आया, तब वही रुपाली खड़ाऊ पहन कर महाराज उसे लेने आए और स्वयं के दिव्यधाम का वासी बनाया। प्रभु की कृपा से परवरदिगार का वह पवित्र व्यक्ति जन्नतशील हुआ ! जिन महाराज की खड़ाऊ की आवाज मुसलमान का भी ऐसा अनुपम कल्याण करती है, वह महाराज की दृष्टि में रंचमात्र भेदभाव किस प्रकार संभव हो सके? विशुद्ध-दिव्य प्रेम में कोई बंधन शक्य ही नहीं।

दुबली भट्ट के तेरह पैसे !

महाराज गढडा में भगवान गोपीनाथ का मंदिर बनवा रहे थे। हरिभक्तों की भीड़ इकट्ठी हुई थी। महाराज आसन पर विराजमान थे। इतने में वहां मंदिर के लिए भेंट लिखवाने की शुरुआत हुई। सभी अपनी-अपनी इच्छा के मुताबिक रकम लिखवा रहे थे। कोई हजार, तो कोई पांच हजार। कोई किसी को आग्रह नहीं कर रहा था- न ही किसी को आग्रह करना पड़ता था। गिनती होती जा रही थी। महराज मंदमंद हंस रहे थे। इतने में एक दीनहीन ब्राह्मण सभा में दाखिल हुआ। मैले कुचैले, पुराने, फटे कपड़े पहने थे और माथे की पगड़ी भी फटी सी थी।

सभी उसे पहचानते थेः- ओह, यह तो दुबली भट्ट ! यह यहां किस काम से आया होगा? यहां इसका क्या काम है?

सभा में विराजमान काठी दरबार दुबली भट्ट को देखकर व्यंग्य में हंसेः-'भला आया भाई! तेरे बिना सभा शोभती नहीं थी! मंदिर में कितने हजार देने आए हो!'

सभा में पावं रखते हुए दुबली भट्ट कांप रहे थे। अंदर दाखिल तो हो गए, लेकिन फिर उनके पांव उठ नहीं रहे थे। उससे आगे कदम बढ़ नहीं रहे थे। एक मन हुआ कि वापिस चला जाऊं दुसरा मन कहता कि 'नहीं, भगवान का मंदिर बन रहा है। ऐसे पुण्य काम में क्या तेरा कोई हिस्सा नहीं? कुछ दिए बिना मरेगा तो तेरे जीव का कल्याण कैसे होगा? यह अवसर फिर तेरे लिए आने वाला नहीं।'

सो, वापिस दो कदम भरे और फिर भी अटक जाते। काठी दरबार मुछों पर ताव रखते और उसके सामने देखकर हंसे। लेकिन महाराज की नजर उस पर पड़ गई! महाराज ने देखा कि दुबली भट्ट को नजदीक आना है, लेकिन आया नहीं जाता। सभा में बहुत भीड़ भी है। सो, महराज ने हाथ से इशारा करके भट्टजी को रास्ता देने कहा। भट्टजी धीरे-धीरे आगे आए और आते ही महराज के चरणों में गिर पड़े। महाराज ने आसन पर से उतर कर, हाथ पकड़ कर भट्टजी को खड़ा किया।

भट्टजी हर्ष से गिलगिले हो गए। उनकी आंखों में आसूं आ गए। रोते जाते और माथे से पगड़ी उतारी व उस के फटे हुए कोने में से एक गांठ खोली तो उसमें से एक पैसा निकाला। महाराज ने सामने से हाथ लम्बे करके एक पैसा लिया। भट्टजी ने पगड़ी की दूसरी गांठ खोली तो उसमें से दूसरा पैसा निकाल कर महाराज के हाथ में रखा। यूं भट्टजी गांठ खोलते रहे और महाराज उनके सामने हाथ लम्बे करके खड़े रहे। एक-एक करके भट्टजी ने चीथड़े हुई पगड़ी में से तेरह गांठ खोली और तेरह पैसे निकालकर महाराज के हाथ में रखे। फिर दंडवत् प्रमाम करके बोले- 'महाराज इतने ही हैं। गोपीनाथजी की सेवा में स्वीकारने कृपा करो।'

महाराज को भट्टजी की दरिद्र हालत का ख्याल था, सो उनको कहा-भट्टजी, पैसे रखो! नई पगड़ी ले आना।

जवाब में भट्टजी हाथ जोड़कर बोले-'नहीं महाराज! इसी से अब चल जाएगा। अब मैं जीने वाला भी कितना हूं? ज्यादा तो कुछ है नहीं मेरे पास, जो है वह तेरह पैसे हैं। इतना भी अच्छे में इस्तेमाल कर सकूं, तो मेरा जन्म सफल हो जाए।

इतना कहकर पगड़ी माथे पर रखकर भट्टजी वापिस चले गए। महाराज की प्रसन्नता का पार नहीं था! और.....महाराज ने 'गोपीनाथ महराज की जय' बुलाई। सारी सभा में यह जयघोष गूंज उठा। काठी दरबार विचार में पड़ गए। उन्हें लगा कि हमने तो थेली भर-भर कर दी, तब तो जय नहीं बुलवाई और अभी यह दुबली भट्ट के तेरह पैसे आए, तब जय बुलाई। आखिर सुराखाचर ने हिम्मत करके महाराज से पूछ ही डाला-'महाराज, यह जयघोष कैसा?

महाराज ने कहा-'मंदिर पूरा हो गया, अब पैसे इकट्ठे करने की जरुरत नहीं पड़ेगी।'

'ओहो, ऐसा भट्टजी ने क्या दिया, महाराज?'

महाराज ने हाथ में पैसे दिखा कर कहा-'तेरह पैसे!'

सुराखाचर ने कहा-'सब ने थैली भर-भर कर दी, उससे मंदिर पूरा नहीं हुआ और यह तेरह पैसे से हो गया।'

महाराज ने कहा-'देखो, जिसने थैली की थैली दी, उसने वैसी दूसरी कितनी घर में रखकर फिर दी, पर इस भगत को तो नहीं घरबार या नहीं खेत है। पहनने के लिए कपड़े नहीं। यजमानवृत्ति करके पेट भरता है-इतने साल के बाद ये तेरह पैसे इकट्ठे हुए हैं, वे सारे के सारे उसने गोपीनाथजी की सेवा में दे दिए। भगवान के नाम पर देते हुए तुम सब को यह चिंता रही कि तुम्हारा कैसे चलेगा, सो पहले उसका जुगाड़ किया और घरबार, पशु-जानवर, खेत तो है ही। सब कुछ सलामत रखकर ही तो तुमने थोड़ा दिया है।

तब सुराखाचर कुछ बोले नहीं। काठी दरबारों ने भी सिर हिलाया-महाराज की बात तो सही! हमारी भक्ति दुबली भट्ट जैसी नहीं।

काठी दरबार कम समझते थे। बारीक चीज ज्यादा समझ नहीं पाते थे। लेकिन समझने की बात तुरन्त समझ जाते। स्वभाव से भोले, दिल में कपट नहीं, सो झट से तीखा सवाल भी कर डाला और महाराज ने जो जवाब दिया-उस बात का मन में विचार करते हुए सिर हिलाते हुए कहने लगे-'महाराज की बात तो सच्ची है, हमारी भूल ही है। भगवान के सम्मुख अधूरा जीव रखकर जाएं तो वह कैसे चले? भक्ति तो छलकती जानी चाहिए। भक्ति के मुकाबले कोई आशा नहीं रखनी चाहिए। कुछ न मांगे, कुछ आशा न रखे, तो भगवान की कृपा कहीं से भी उतरेगी और हमें भिगो देगी।' काठी दरबारों को महाराज के प्रति यह भाव आया।

भक्तराज झीणाभाई

एक बार झीणाभाई कुछ काम से मांगरोल गए। वहां पता चला कि हरिभक्त कमळशी वांझा बहुत बीमार हैं और उनकी तीमारदारी करने वाला कोई नहीं। सगे संबंधी कोई भी उनके पास फटकते नहीं।

झीणाभाई कमळशी की तबियत पूछने गए। वहां कमळशी उनको देखकर रो पड़े। उनकी ऐसी निराधार हालत देखकर झीणाभाई का मन भर आया। उनको महाराज के शब्द याद आए-'गरीब सत्संगी हो, तो भी उसके दासानुदास बनकर रहना।'

कमळशी नीची जाति के थे लेकिन हरिभक्त थे। सो, झीणाभाई के मन में उनका गुण बस गया और पक्का कर लिया कि इस गरीब सत्संगी की जितनी सेवा होगी, उतनी करुंगा। पहले तो उन्होंने कमळशी के लड़के व बहु को बुला कर कमळशी की सेवा करने को कहा। लेकिन उन लोगों ने साफ कह दिया-'हमसे यह नहीं होगा तब झीणाभाई ने उन्हें अपने घर ले जाने का विचार किया। लेकिन बिमार कमळशी को किस प्रकार ले जाए? चारपाई मेंसुलाकर ही ले जाना पड़े। सो उन्होंने मज़दूर बुलाए। पर, तीन ही मज़दूर आए, एक कम पड़ा। झीणाभाई बोले-'एक मैं'।

तीन मज़दूर और चौथे झीणाभाई ने कमळशी की चारपाई उठाई। झीणाभाई के पास उनका घोड़ा भी था। सो, एक हाथ से उन्होंने घोड़े की लगाम पकड़ी। इस तरह घर में से बाहर निकले, तभी कोई जाने-पहचाने ने देखा। वह दौड़कर मज़दूर को बुलाकर ले आया। अब झीणाभाई घोड़े पर बैठकर पंचाला आए। स्वयं के आंगन में उन्होंने भगत की चारपाई रखवाई और दिन रात पांव दबाते, पास बैठकर खिलाते और उनके कपड़े अपने हाथों से धो डालते। महाराज के शब्दों में कमळशी को आश्वासन भी देते कि भगवान की इच्छा से ही सुख-दुख आते हैं। सो, उसमें कुछ सोचना नहीं और जैसे भगवान राजी हो, वैसे हमें खुश रहना चाहिए।

इस बात का महाराज को पता चला, इसलिए महाराज खुद पंचाला पधारे और झीणाभाई को गले लगाया- एक बार नहीं, सात बार! इस तरह महाराज ने अपनी प्रसन्नता प्रकट की।

समय बीतते झीणाभाई स्वयं बीमार हुए। इस बीमारी से वे उठ नहीं सकेंगे- इस बात का सबको आभास हो गया। महाराज को यह समाचार मिला तो तुरन्त वे अपनी माणकी घोड़ी पर सवार होकर निकले। मध्यरात्रि जूनागढ़ में झीणाभाई के दरवाजे के बाहर घोड़ी की चाप सुनाई दी, तो सभी दौड़कर सामने आ गए। महाराज झीणाभाई की चारपाई के सिरहाने के पास जाकर बैठे।

महाराज ने कहा- 'झीणाभाई, लड़के के बारे में कुछ सिफारिश करनी है?'

झीणाभाई ने कहा-'आपका आशरा रखेगा तो आप संभालने वाले ही हो और नहीं रखेगा तो मैं सिफारिश करुंगा, तो भी कुछ होने वाला नहीं।'

फिर महाराज ने पूछा-' कुछ मांगना है?'

झीणाभाई ने कहा-'यहां मंदिर करना।'

महाराज ने वह मांग स्वीकारी।

फिर महाराज ने झीणाभाई की मां को कहा-'झीणाभाई को जूनागढ़ राज्य दें तो?'

मां ने कहा-'यह तो बहुत अच्छा।'

महाराज ने कहा-'बड़ौदा का दें तो? लेकिन नहीं, मुझे तो इसे इंद्रासन, ब्रह्मासन से अधिक अक्षरधाम देना है।'

यूं कहकर महाराज ने झीणाभाई के मस्तक पर स्वयं का हाथ रखा। उसी वक्त झीणाभाई ने देह छोड़ दिया। झीणाभाई की अंतिम यात्रा निकली तब महाराज ने स्वयं उनकी अर्थी को कंधा दिया। पर, आंगन से बाहर निकले, तो दूसरे भक्तों ने महाराज के कंधे से अर्थी ले ली। यह देखकर सभी को खूब आश्चर्य लगा था। सो, मुक्तानंदस्वामी ने महाराज को पूछा-' महाराज, इस बात का रहस्य?'

महाराजन ने कहा-'रहस्य साफ स्पष्ट है। झीणाभाई हरिभक्त कमळशी की चारपाई लेकर जितने कदम चले थे, उसके दुगने कदम झीणाभाई की अर्थी लेकर हम चले भगवान के भक्त होना कठिन है, पर भक्त के भक्त बनना, वह उससे अधिक कठिन है। यह अति कठिन काम झीणाभाई ने सहज भाव से किया, सो मेरी उन पर प्रसन्नता है।'

✡✡✡✡✡

अनिर्देश की गतिविधियां.........

7 मार्च 1996 को प.पू. काकाजी को शरीर छोड़े दस साल पूरे हुए.....प.पू.काकाजी के स्वधामगमन दिन निमित्त पू. गुरुजी ने अनिर्देश में सुबह 7:45 से 9:00 विशेष भजन-धून्य प्रार्थना का प्रोग्राम रखवाया था। सभी हरिभक्त सुबह इकट्ठे हो गए.....सभी ने एकचित्त व भावपूर्ण हृदय से धून्य करी। तत्पश्चात् प.पू. काकाजी की परावाणी की टेप सुनी। वह परावाणी को समझाते हुए पू.गुरुजी बोले-'**आज भीतर में टटोलने का दिन है....प.पू. काकाजी पूछते थे कि तुम अखंड स्मृति में रहकर काम करते हुए? अखंड ब्रह्मस्वरुप वर्ते? तुम्हारा स्त्री-पुरुष भाव गया? हम अखंड देह और मन में रहते हुए वृत्तियों को पंपलाते हैं। जो ग्रुप है उसमें दिव्यभाव रखेंगे तो हम दिव्य हो जाएंगे। खुद के लिए साधु की दृष्टि और मुक्तों के लिए भगवान की दृष्टि.....प.पू. काकाजी ने जो स्मृतियां दी हों-वो याद किया करना है। अखंड स्मृति में रहकर मूर्ति में घुले रहेंगे.....प्रकृति प्रारब्ध कहां चले जाएंगे पता नहीं चलेगा। एक दायका पूरा हुआ औरअब तक प.पू. काकाजी हमें निभाते रहे हैं, पर अब हम उनकी ओर निगाह रखकर रहें-वह काम करना है.......'**

शाम को हर मास की तरह भजन संध्या का कार्यक्रम रखा गया- जिसमें प.भ.राकेशभाई, प.भ. मंजुल साहब, प.भ. सुबोधभाई, प.भ. विनोदभाई, प.भ. विनोदभाई(पंजाब) पू. ऋषिभाई ने प.पू. काकाजी की स्मृति कराते भजन गाकर सभी को प.पू. काकाजी की स्मृतियों से तरबोर कर दिया।

फिर सभी ने प.पू. काकाजी की परावाणी सुनी और उसे समझाते हुए पू. गुरुजी ने इन बातों पर जोर दिया कि-'**एक जोड़ करो.....सेवा इत्यादि प्रकृति के अधीन रहकर करते हैं, इसलिए नहीं मिलता। कोल्हू के बैल की तरह लगे रहते हैं.....'**

यूं पू. गुरुजी ने सभी को राह बताई, जिससे सभी हरिभक्तों ने स्वयं को धन्य माना.....

✡✡✡✡✡

प.पू.काकाजी का विजयदिन

★ **'आज हम मुकुंद की हीरक जयंती नहीं, बल्कि प.पू. काकाजी का विजय दिन मना रहे हैं।'** ***-प.पू. पप्पाजी***

★ **'कल सारी सभा दौरान मैंने यही प्रार्थना, भजन, संकल्प किया करा कि आज जैसी आत्मीयता दिखाई दे रही हैं, वह सदैव स्थिर रहे.....'**

-प.पू. स्वामिजी

★ **'मैं यदि यह कहूँ कि गुणातीतानंदस्वामी को जूनागढ़ मंदिर के लिए भेजा, जब कोई साधन नहीं था-हथौड़ी भी नहीं थी, पत्थर से ही पत्थर फोड़ने पड़ते थे, उसमें गुणातीतानंदस्वामी ने महाराज के वचन से वहां की जवाबदारी स्वीकारी ऐसा मुश्किल काम मेरे ख्याल से दिल्ली का था, जहां कोई व्यवस्था नहीं। ऐसे संजोगों और परिस्थिति के अन्दर मुकुंदजीवनस्वामी ने काका के वचन से दिल्ली में जाकर पड़ाव डाला.......'**

-प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

★ **'......ऐसे हीरक महोत्सव तो बहुत मनाए जाएगें और मनाए गए हैं, पर इस हीरक महोत्सव की विशेषता कुछ और प्रकार की है......'**

-पू. निर्मलस्वामिजी

★ **'यह function जो हो रहा है- It's a spiritual function, It's not social function..... प.पू. काकाजी ने पू. गरुजी का selection करके जो दिल्ली भेजा, इससे बेहतर कोई selection हो नहीं सकता......'**

-पू. मल्कानी साहेब

★ **'सच में, इस समैये के पीछे कोई inner current काम कर गया....'**

-पू. वशीभाई (ताड़देव)

इनकी बदौलत ये सब कुछ है।

बीते नवम्बर 95 में पू. शीला आंटी के समय प.पू. पप्पाजी दिल्ली पधारे थे...फिर वापिस जाते हुए प.पू. गुरुजी को बोले कि अब मार्च में तुम्हारे जन्मदिन पर दिल्ली आऊँगा...... प.पू. गुरुजी ने सोचा कि 80 वर्ष की आयु में प.पू. पप्पाजी भागदौड़ करें, इससे अच्छा मैं ही गुजरात जाकर आशीर्वाद ले लूँगा। सो, उन्होंने प.पू. पप्पाजी को प्रार्थना करी कि आप इतनी दौड़ाभागी नहीं करना.....मैं 13 मार्च के एक-दो दिन बाद आपसे आशीर्वाद लेने वहीं आ जाऊँगा। प.पू. पप्पाजी ने गुजरात जाकर प.पू. स्वामिजी को बात करी कि मुकुंद मार्च में यहां आने वाला है, तो क्यों न हम उसकी हीरक जयंती इस साल यहीं मना लें? यूं हरिधाम में पू...गुरुजी की षष्ठीपूर्ति मनाना निश्चित करके 17 मार्च Date declare हुई..........

दिल्ली में 10 मार्च को पू. गुरुजी की जयंती मनाने के बाद सब गुजरात जाने की तैयारी में लग गए.....15 मार्च की शाम को पश्चिम एक्सप्रेस में दिल्ली व पंजाब के कुल मिलाकर करीब 70 मुक्तों गुजरात जाने निकले.....प.पू. गुरुजी की जयंती की उमंग-उत्साह सभी में दिखाई पड़ रहा था.... जाते समय एक आश्चर्यकारक घटना बनी, जिससे प.पू. काकाजी जो बात करते थे कि अगर हर जगह Green signal यानि Yes-Yes-Yes मिल जाए तो समझना कि वो महाराज की मर्जी है। यह दर्शन स्पष्ट हुआ.....रास्ते में पिछले दिन रतलाम के करीब Tankers की Train में आग

सभी प्रगट गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में 16-3-96 शनिवार व 17-3-96 रविवार को विद्यानगर, ब्रह्मज्योति व हरिधाम में प.पू. गुरजी की हीरक जयंती अत्यधिक आत्मीयता व आनंद से मनाई.... प.पू. काकाजी का यत्किंचित् ऋण अदा करने की हर एक की भावना व प.पू. काकाजी के माध्यम से प.पू. गुरुजी के प्रति की सभी की आत्मीयता, अपनापन, अहोभाव-हर एक के दिल को स्पर्श कर गया.....

लगने की दुर्घटना हो गई थी....दूसरे दिन भी वह आग जल रही थी। उस आग का असर Railway Track पर काफी पड़ा था। रेल की पटरियाँ मुड़ जैसी गई थी, जिसकी वजह से सारी trains reroute करके भेजी जा रही थी और इस वजह से सभी गाड़ियाँ सात-सात, आठ-आठ घंटे लेट थी। यहां तक कि 'राजधानी' को भी उस लाइन से passage नहीं दिया गया और वह train बड़ौदा 8 घंटे late पहुँची.......लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि पश्चिम एक्सप्रेस यानि हमारी गाड़ी ही पहली गाड़ी थी जिसे उस लाइन से जाने दिया.....अक्सर राजधानी को first priority हमेशा मिलती है, पर उस दिन राजधानी को न देकर हमारी गाड़ी को दी गई। वर्ना राजधानी 8 घंटे लेट थी, तो पश्चिम एक्सप्रेस तो कितने घंटे लेट होती? प.पू. काकाजी ने ही जैसे हमारी favour की हो- क्योंकि विद्यानगर-गुणातीत ज्योत में प.पू. पप्पाजी ने पू. गुरुजी की हीरक जयंती निमित्त सुबह एक छोटे से उत्सव का आयोजन कर रखा था। हमारी train यदि यूं late होती तो हमें वह लाभ नहीं मिलता।

हम सब 16-3-96 को सुबह 9-15 पर बड़ौदा पहुंच गए..... वहाँ स्टेशन पर सांकरदा से पू. विज्ञानस्वामी, पू. निष्कामस्वामी, गुणातीत ज्योत से पू. ज्योति बहन, पू. हंसा दीदी receive करने आए थे। सभी सीधे ब्रह्मज्योति-विद्यानगर गए.......प.पू. पप्पाजी का आनंद तो जैसे समाता नहीं था। वहाँ बहनें बता रही थीं कि प.पू. पप्पाजी तो स्टेशन पू. गुरुजी को लेने आने खूब आग्रह कर रहे थे, उन्हें बड़ी मुश्किल से request करके रोका......

सब जल्दी-जल्दी नहा धोकर सभा में पहुँचे..... प. पू. काकाजी के प्रति अनोखी भक्ति अदा करने की भावना से बम्बई ताड़देव से पू. बापु, पू. राजुभाई भट्ट व साधक बहनें पहले से ही पहुंच गये थे..... सभा छोटी-सी थी, पर बहुत अद्‌भुत....पीछे परदे पर दो हंसों का चोंच में मोती की माला पकड़े हुए दर्शन हो रहा था और साथ ही प.पू. गुरुजी के गुण लिखे हुए थे-सर्वदेशीय, स्नेहल, समर्थ, स्वरुपनिष्ठ, वैरागी, प्रेमल, सुहृद, कल्याणकारी, दिव्य, आत्मीय, भक्तिस्वरुप, निर्मानी, निर्लोभी, निःस्वादी, निःस्नेही, निष्कामी और प्रभुस्वरुप....

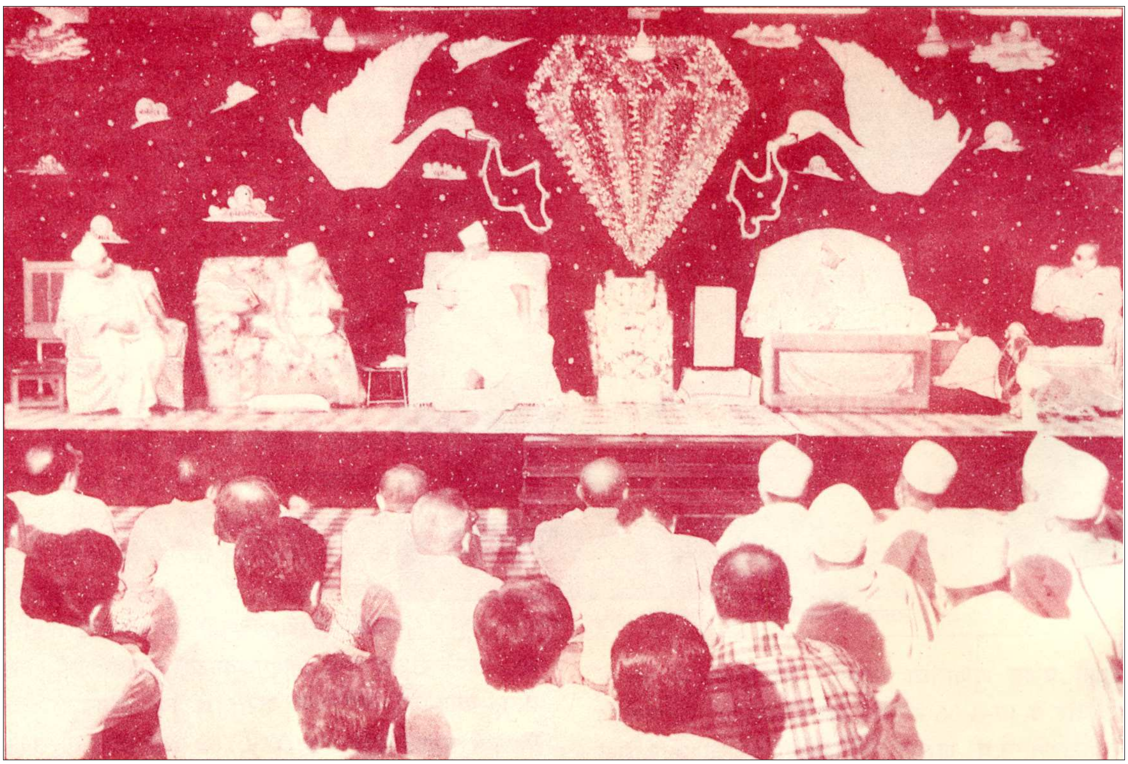

गुणातीत ज्योत के प्रांगण में पू. गुरुजी की हीरक जयंती का शुभारंभ

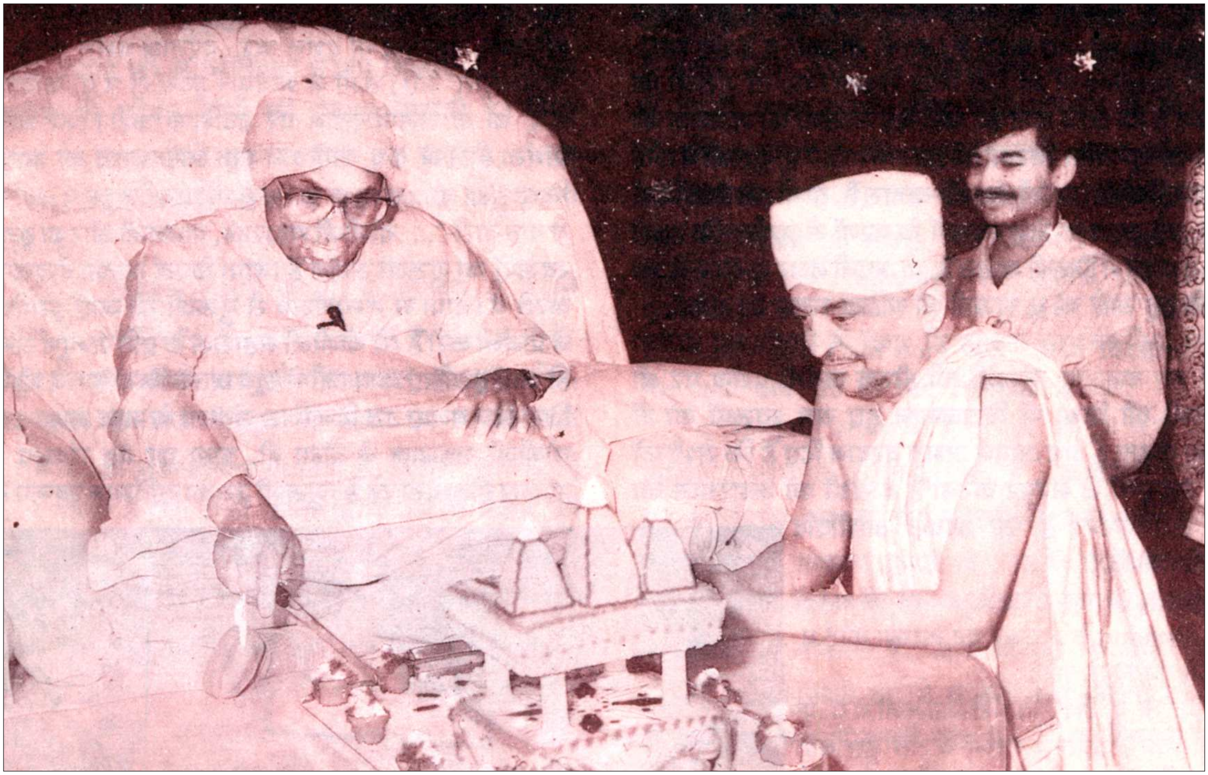

प.पू. काकाजी के जंगम मंदिर की जयंती पर स्थावर मंदिर के आकार का केक काटते प.पू. पप्पाजी...... (गुणातीत ज्योत)

भाईयों ने भजन गाया......प.पू. पप्पाजी ने अन्तर की प्रसन्नता बताते हुए कहा--'**काकाजी का विजयदिन आज मना रहे हैं। पू. गुरुजी का हीरक महोत्सव तो मना रहे हैं, पर यह पू. काकाजी का विजयदिन मना रहे हैं। काकाजी ने कैसा भव्य सर्जन किया..... दिनकरभाई का वहाँ.....यहां गुरुजी का जबरदस्त.....हमारे लिए तो आनंद करने की बात है। आज काकाजी होते, बा होते तो खूब खुश होते.....**'

प.पू. पप्पाजी के आशीष के बाद मंदिर के आकार में बना केक प.पू. पप्पाजी-पू. गुरुजी नें मिलकर काटा......

पश्चात् पू.गुरुजी ने आशीष याचना की-'**जब जब यहां पू. पप्पाजी के पास या ताड़देव जाना मिला या पू. कांतिकाका के यहाँ जाएं, तो सारी पुरानी स्मृतियाँ-पुराने प्रसंग याद आ जाते हैं......पू. काकाजी हमेशा तीन बातें बोला करते थे-मूर्ति में रहकर काम करो, अखंड स्मृति में रहो और ब्रह्मरुप वर्तने लग जाओ। पू. काकाजी की बताई इस दिशा की तरफ हमारी गति भी है, नहीं हैं ऐसा नहीं, लेकिन जो 'अखंड' की बात करते हैं, वह रहता नहीं। कभी कोई वृत्ति खींच ले जाती है, कभी कोई इच्छा भूल करा देती है। हम अखंड स्मृति में नहीं रहते.....अखंड स्मृति का अर्थ पू. काकाजी यह भी बताते कि स्मृति is not rememberence, it is a Consciousness- अखंड वृत्ति जिसे कहते हैं। महाराज की सार्वभौम सत्ता का स्वीकार-हम जिसे कहते हैं....तो अब सचमुच ब्रह्मभाव में अखंड रहते हो जाएं-ऐसे आशीर्वाद पप्पाजी दें......यह बात पू. पप्पाजी के पास इसलिए कर रहा हूँ कि अभी-अभी पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की हीरक जयंती पर पू. पप्पाजी ने कहा था कि तुम यदि नहीं भी जीओ, पर बड़े पुरुष यदि राजी हो जाएं तो बक्शिश में भी दे दें...ऐसी बात समर्थ ही बोल सकता है.....पर पू. पप्पाजी की कही इस बात का हमें विश्वास आए और सचमुच हम निहाल हो जाएं-पप्पाजी ही करुणा करके ऐसे आशीर्वाद दें.....**'

पू. गुरुजी की इस आशीष याचना को समझाते हुए प.पू.पप्पाजी बोले-' **योगीजी महाराज कई बार ये बात करते थे, कृपा हो तो चाहे कैसा भी हो-उसमें सब गुण आ जाएं....कृपा साध्य में हम लोग आ गये हैं। योगीजी ने सिर्फ कृपा ही करी है-सो कृपा में आए हैं। इसी कैफ में रहना है। आज या कल उनके जैसे ही गुण देने वाले हैं ही।**'

इस मंगलकारी अवसर पर पू. मल्कानी अंकल वहां पहले से ही पहुंच गए थे... सो पू. मल्कानी अकंल पू. गुरुजी के प्रति अपने दिल के भाव व्यक्त करते हुए बोले—**'पू. गरुजी 60 साल के लगते ही नहीं, बल्कि 23 साल के Youngster लगते हैं। पू. गुरुजी का सभी के लिए जो प्यार है, वह उन्हें fresh व free रखता है। चाहे कोई बच्चा हो, चाहे 50 साल का हो, पूरी families हो, उनको पू. गुरुजी इतना अधिक प्रेम देते हैं, जिसका कोई discription हम नहीं कर सकते। मुझे आश्चर्य होता है-पू. गुरुजी हर एक की Choice का ख्याल करके खाने की dish तक बनवा कर offer करते हैं.....पू. गुरुजी ने physical प्रेम भी दिया है, physical protection भी दिया है.... emonational Love भी दिया है, spritual Love भी दिया है। जितने भी सत्संगी वहाँ आते हैं, उनके सिर से एक बोझ उठा लिया है। उन्हें एक बेफिक्र दे दी है। हर एक family पू. गुरुजी पर सब छोड़कर निश्चिंत हैं.....कुछ भी problem हो तो बस पू. गुरुजी को telephone कर देवें......वे हर समय telephone attend करते हैं। इतनी बेफिक्र व इतना प्यार यह तो families में भी नहीं मिल सकता। यह तो गुरुजी का बड़प्पन है कि आने वाले हर छोटे-बड़े सत्संगी को महाराज की लीला का-गुणातीत स्वरुपों की पहचान कराने पू. गुरुजी ने कोई कसर नहीं छोड़ी। पर जो कसर है-कचास है, तो वो हम सत्संगियों की है......तो आज के दिन स्वरुपों के चरणों में प्रार्थना कि हमारे सत्संग करने में जितनी कचास है, वो अपनी नजर से -प्यार से उड़ा दें ताकि हम सभी को पू. गुरुजी की महिमा समझ आ सके।'**

पू. अश्विनभाई ने थोड़े ही शब्दों में निचोड़रुप प्रार्थना करते हुए कहा-**' पू. गुरुजी की हीरक जयंती प्रसंग पर श्री ठाकुरजी की निश्रा में विराजमान हुए सब स्वरुपों को मैं प्रार्थना करता हूँ जब आपने अभय वरदान दिए हैं कि सभी को ऐसे सद्गुणों से भरपूर करना है व सभी को अक्षरधाम का सुख लेते करना है, तो आपके आशीर्वाद चिरंजीव बनें......'**

इसके पश्चात् गुणातीत ज्योत की बहनों द्वारा diamand के आकार का बनाया कार्ड पू. गुरुजी को दिया गया......

फिर प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने प.पू. गुरुजी का महात्म्य दर्शन कराते हुए बात करी-**'मैं यदि कहूं कि गुणातीतानंदस्वामी को जूनागढ़ मंदिर के लिए भेजा, जब कोई साधन नहीं था, हथौड़ी भी नहीं थी-पत्थर से ही पत्थर फोड़ने पड़ते थे- उसमें गुणातीतानंदस्वामी नें महाराज के वचन से वहां की जवाबदारी स्वीकारी-ऐसा मुश्किल काम मेरे ख्याल से दिल्ली का था, जहाँ कोई व्यवस्था नहीं थी। ऐसे संजोगों और परिस्थिति के अंदर मुकुंदजीवनस्वामी ने काका के वचन से दिल्ली में जाकर पड़ाव डाला। कई बार दिल्ली जाते, किसी का सहकार नहीं। काकाजी और मुकुंदजीवनस्वामी दो के**

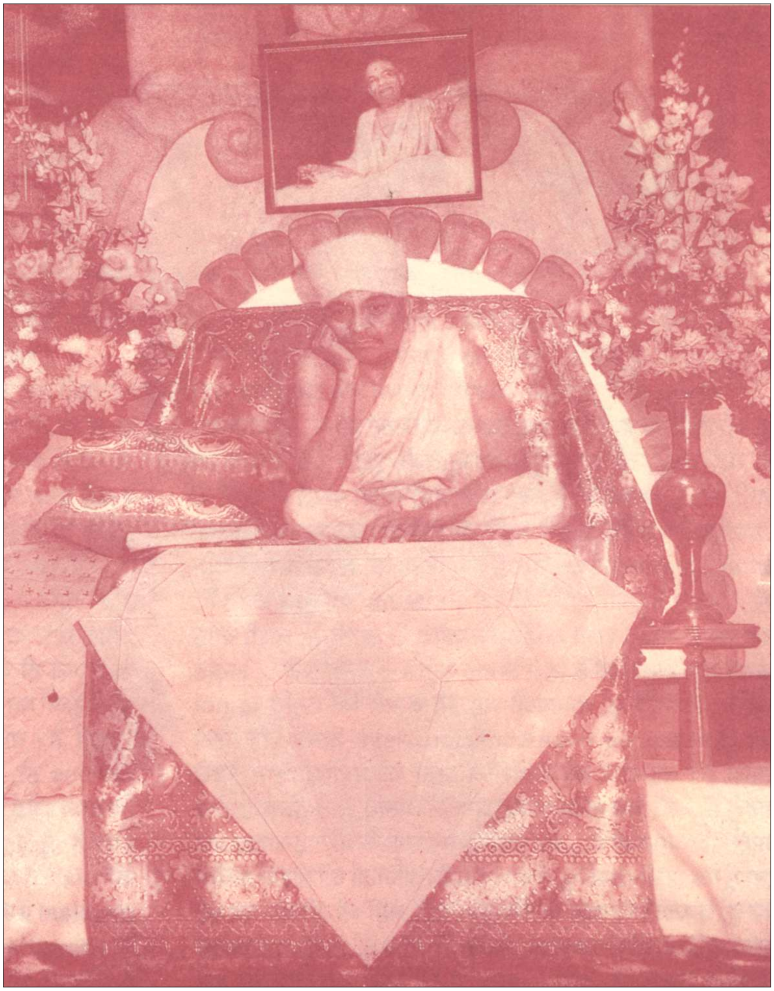

ब्रह्मज्योति की पावन तपोभूमि पर विराजमान प.पू. काकाजी का 'कोहिनूर हीरा !'

सिवा तीसरी व्यक्ति का-यहाँ तक कि साधु की जोड़ भी नहीं मिले.....तो भी काका के वचन से वहाँ दिल्ली में सभी के साथ adjist हुए....ऐसे संजोगों व परिस्थिति के अन्दर मुकुंदजीवनस्वामी ने काम किया है, तो आज काकाजी, बा, पप्पाजी और स्वामिजी सभी के अन्तर की प्रसन्नता पाकर सच में बापा के वारिसदार-काकाजी के वारिसदार बन गए......काकाजी का जो मूलभूत संकल्प था सर्वदेशीयता का, दिव्यता और निर्दोषबुद्धि का वह संदेश आज सब में फैला कर सारा समाज आज ऐसा तैयार कर दिया.....'

उत्सव समाप्त होने पर सभी मुक्तों ने वहीं प्रसाद लिया और दोपहर का आराम करके सभी ने शाम को वरताल में हरिकृष्ण महाराज के दर्शन करे....वरताल दर्शन करके सभी ब्रह्मज्योति गए। सभी ने भावपूर्ण हृदय से प.पू. काकाजी व प.पू. बा के समाधिस्थान पर प्रदक्षिणा करी। फिर वहाँ पर प्रार्थना हॉल में प.पू. साहेब ने एक छोटे उत्सव का आयोजन किया हुआ था.....सभा के प्रारंभ में परिचय दते हुए पू. शांतिभाई ने बात करी......'**योगीजी महाराज, काकाजी और बा इन तीन स्वरुपों का गुरुजी सर्जन हैं। बापा केवल आत्मा देखकर प्रेम करते थे। बापा में सम्पूर्ण रुप से गुरुजी खो जाएं इसलिए बा ने प्रार्थना करी है। ये योगीजी महाराज के प्रति सम्पूर्ण समर्पित हो जाएं इसलिए काकाजी ने खूब जतन किया है....ये योगेश्वर जिस दिन बनाए उस दिन जिस संकल्प के साथ आशा रखकर योगीजी महाराज ने् दीक्षा दी, बापा का वह संकल्प आज साकार होता देख रहे हैं। गुरुजी उसका मूर्तिमान स्वरूप हैं..... '**

तत्पश्चात् पू. अश्विनभाई ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा-'**गुरुजी को जब-जब सभा में सुने तब एक प्रकार की आध्यात्मिक प्रेरणा मिलती है। साधक के तरीके से जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। जिस सत्पुरुष के साथ-अपने गुरु के साथ हम रहते हैं, उसके साथ का संबंध ज्यादा ऊँचा व दृढ़ बनाने की प्रेरणा मिलती है....'**

फिर पू. विट्ठलदासभाई जो प.पू. गद्दरुजी से पुराने परिचित हैं, उन्होंने अप ो उद्गार व्यक्त करते हुए कहा-' **बहुत सालों पहले जब दो-तीन साल ही हुए होंगे, तब गुरुजी के पास रिक्शा में जाने का Fund नहीं था। तब local transport buses है, उसमें गुरुजी ने Travel किया है। तो ऐसी कठिनाईयां उन्होंने सहन की क्योंकि उनका target था कि बापा का कार्य करना है- भगवान स्वामिनारायण का संदेश है-वो हमको फैलाना है... गुजरात में वह सब करना सरल बात है, मगर दिल्ली जैसे-जहाँ गुजराती भाषा नहीं है, गुजराती culture नहीं है, गुजराती कोई nature भी नहीं है, वैसी कठिन जगह पर बैठकर उन्होंने सत्संग के लिए जो कुछ भी किया वो बहुत अच्छी चीज बन गई है और वो permanent हो गया है......'**

प.पू. गुरुजी की जयंती निमित्त निजी प्रेम छलकाते हुए पू. मल्कानी साहेब बोले...'**मुझे ऐसी कल्पना भी नहीं थी कि गुरुजी का 59th Birthday इस intensity से, इस भाव से मनाया जाएगा। इसके लिए सब गुणातीत स्वरुपों को-पप्पाजी को, साहेब को, स्वामिजी को- सबको मैं दिल से, अन्तर से Thank you करना चाहता हूँ....चाहे कैसा भी किसी का nature हो एक time तो मन में एक तमन्ना ऐसी आ जाती है कि हमारे पास ऐसे गुरु होते जो हमें guide करें। जब से गुरुजी से पहचान हुई उनके मंदिर में गए, beginning में तो हम सही तरीके से पहचान नहीं पाए, मगर जैसे साल गुजरते गए, हमें मन में तो एक विश्वास हो ही गया कि ऐसे गुरु तो प्रभु ने हमारे पास भेजे हैं और बड़े संतों ने जो फैसला किया इससे बेहतर कोई Choice कर नहीं सकते.....मैंने अक्सर देखा है और मैं यह बार-बार बोलूंगा कि गुरुजी ने हर एक को Welcome किया । कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है, कोई ऐसा family नहीं है जिसको एक तरह से Welcome न किया हो। बड़े संतों की पहचान हमको किसने करवाई? गुरुजी ने.....गुरुजी ने हमारे ऊपर इतनी gratification की वो हम जिन्दगी में किसी तरह उनको लौटा नहीं सकते। मैं तो इतना ही सोच सकता हूँ कि प्रभु ने हमारे ऊपर बहुत कृपा की-योगीजी महाराज, काकाजी कोई ऐसा better Choice कर नहीं सकते जो हमारे पास दिल्ली में भेजा हैं...... We thank the Lord sincerly, we thank the Gunatit Swaroops for sending us Guruji to guide us spiritualy and I am sure मुझे पक्का विश्वास है कि He will take us to the ultimate Goal.'**

पू. मल्कानी साहेब के बाद प.पू. साहेब प.पू. गुरुजी का माहात्म्यदर्शन कराते हुए बोले....'**काकाजी गुरुभक्ति का मूर्तिमान स्वरुप थे। शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज जो संकल्प करते थे, उसके पीछे वो लग ही जाते...सो, काकाजी**

ने गुरुजी को कहा-शास्त्रीजी महाराज का संकल्प है, आप दिल्ली जाओ-तो गुरुजी दिल्ली गए। गुरुजी बोलते थे- हम क्या करेंगे, वहाँ कोई है नहीं, लेकिन काकाजी कह रहे हैं इसलिए जाना है। वो श्रेष्ठ गुरुभक्ति है.....बुद्धिमान को दासत्वभक्ति लाना बहुत कठिन है..... गुरुजी बहुत बुद्धिमान हैं.....दासत्वभक्ति-काकाजी ने जो कहा है, वही मुझे करना है। दिल्ली में किसी को सत्संग हो या न हो, मंदिर हो या न हो उसके साथ मुझे लेन देन नहीं। मेरी लेनेदेन है काकाजी और योगीजी महाराज के प्रति। ऐसा मानकर जो रहे। वो उपदेशरुप है-साधकों के लिए प्रेरणारुप है। ऐसा करना बहुत कठिन है। अभी हम बोल सकते हैं, पर उस time जो ऐसे गुजरे, तो उनमें काकाजी के प्रति जो सच्चा प्रेम था, उसका वो दर्शन होता है....काकाजी के प्रति, पप्पाजी, स्वामिजी, योगीजी महाराज के प्रति उनकी जो भक्ति है, उसका वो प्रभाव है। तो इस भक्ति को देखकर सारे समाज में जैसा मल्कानी साहेब न् बताया- उनमें भक्ति है। भक्ति का दूसरा रूप है प्रेम-वात्सल्यभाव-वो भी गुरुजी में इतना निकलता है कि सब को उनका स्पर्श हुआ है इसलिए तो सब गुरुजी के पास आते रहते हैं.......'

फिर पू. गुरुजी ने आशीष याचना करते हुए कहा....'**आखिर जब दिल्ली जाना था तो प.पू. काकाजी मुझे बड़ौदा-भीखाकाका के घर मिले और कहा-बापा का संकल्प है व तूझे जाना है, मेरी कोई महत्वाकांक्षा नहीं....तुम्हें निमित्त ही बनना है। सब कुछ आगे-आगे बापा व्यवस्था करेंगे। फिर आशीर्वाद देते हुए कहा 'जाओ राजा ! तुम मेरी बात मान कर जा रहे हो , अभिप्राय की ये भक्ति जो तुम करोगे, उसके फलस्वरुप बापा तुम्हें ऐसी साधुता देंगे कि तुम्हारे आसपास समाज अपने**

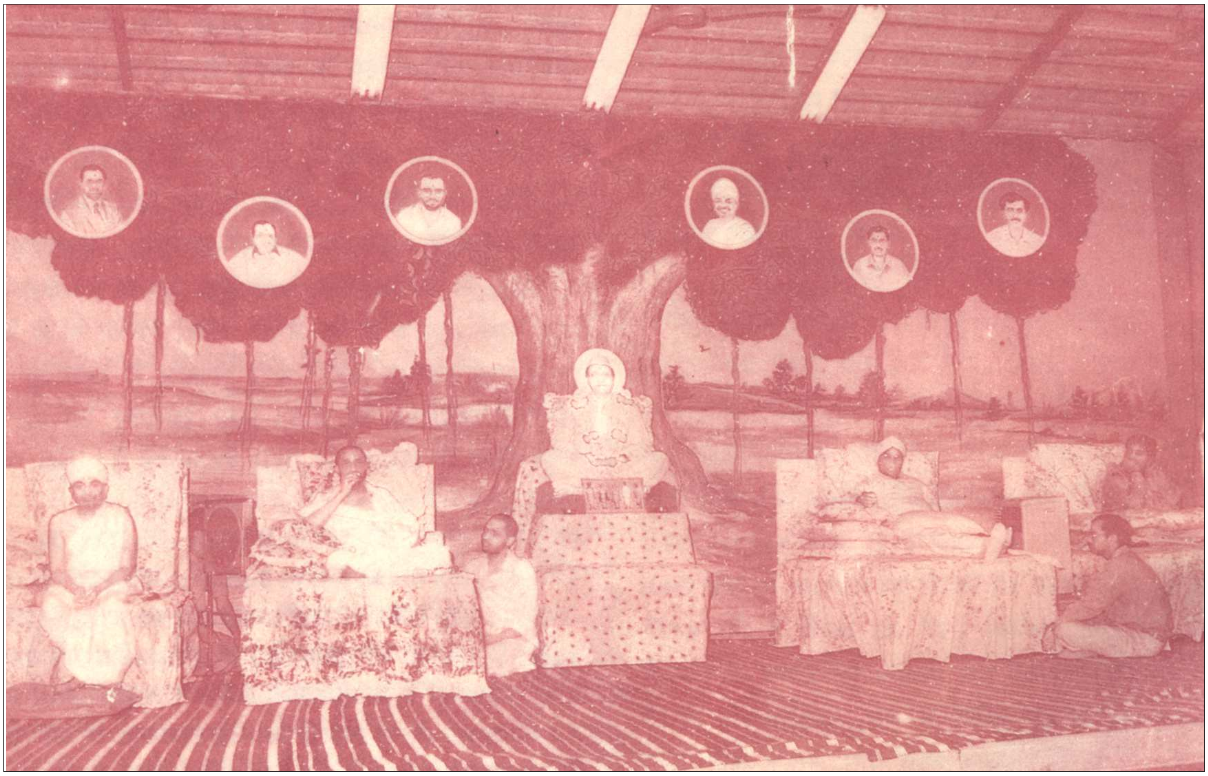

हरिधाम के प्रांगण में वटवृक्ष के तले विराजमान गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में पू. गुरुजी......

आप बढ़ता जाएगा।' सो, आज कुछ भी दिखाई दे रहा है, वह काकाजी का संकल्प काम कर रहा है....आज पप्पाजी, साहेब के पास ये आशीर्वाद मांगने हैं कि उन्होंने जब आशीर्वाद दिए, तब उन्होंने कहा था कि हमें झेलना है, तो झेल सकें और हाश कर सकें ऐसी प्रार्थना!'

प.पू. पप्पाजी ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा...'**सच में अभी प.पू. योगीजी महाराज ने कृपा केवल कृपा-one way कृपा करी है.....अभी आध्यात्मिक सतयुग चल रहा है.....'**

सभा के बाद सभी मुक्त प्रसाद लेकर सांकरदा गए। वहां प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की व संतों की प्रेमभावना से भरी आईसक्रीम खाकर रात को सभी हरिधाम पहुँचे.....हरिधाम के प्रांगण में संतगण भक्ति अदा करने उत्सव की तैयारी में अत्यधिक उमंग से लगा था। आत्मीयता, अपनेपन, उत्साह की अनोखी खुशबू वातावरण में महसूस हो रही थी। अगले दिन 17-3-96 की सुबह प.पू. स्वामिजी के सभी प्रदेशों के करीब 5000 कार्यकर्त्ता प.पू. स्वामिजी की नारायणी सेना उपस्थित थी। वहाँ पर पता चला कि प.पू. स्वामिजी ने पहले से ही सब जगह ऐसा massage भिजवाया था कि जिसकी जयंती मनानी है, वह खूब जाग्रत साधु हैं। सही अर्थ में जीवन जीया हुआ साधु है। तो, जिन्हें आध्यात्मिक सूझ प्राप्त करनी हो, केवल वे ही इस उत्सव में आएं.....

हरिधाम के अंबरीष हॉल में प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती उत्सव का आयोजन रखा था....स्टेज के पर्दे पर एक वटवृक्ष दिखाया था, जिसके मूल में प.पू. काकाजी का दर्शन हो रहा था और उसकी शाखाओं के रूप में पू. कोठारीस्वामिजी, पू. गुरुजी, पू. दिनकरभाई, पू. बापु, पू, भरतभाई, पू. वशीभाई की मूर्तियां थी..... आसपास पू. गुरुजी के प.पू. बापा, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी के साथ के प्रसंगों का दर्शन हो रहा था.....सभा के प्रारंभ में पू. प्रेमस्वरुपस्वामी ने पू. गुरुजी का परिचय देते हुए बात करी....**'उनके आगे के जीवन की तरफ नज़र करेंगे तो उन्हें शायद साधु तो क्या मानव भी ना कहा जाए-ऐसे विशिष्ट प्रकार के गुण लेकर वे धरती पर आए। लेकिन उनके प्रसंग बताते हैं कि काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, बापा के साथ किस प्रकार संबंध करके आज ऐसे भाव को पा गए हैं कि उनके संकल्प से गुणातीतानंदस्वामी ने बातों में जो कहा है कि जैसे वे कहते हैं वैसे भगवान करते हैं, जैसे वे कहते हैं वैसे भगवान घूमते हैं, भगवान को उन्होंने रखा है, भगवान को उन्होंने वश किया है-ऐसे साधु बन गए....'**

फिर पू. दासस्वामी ने पू. गुरुजी के सारे प्रसंगों पर प्रकाश डालते हुए बात करी.....**'काकाजी, बा के अनुपम लगाव से, प्रेरणा से योगी बापा का संकल्प उन्होंने झेला.....अन्तर के निष्कपटभाव से ये वर्ते....वे स्वामिजी को, पप्पाजी को बापा के स्थान पर-काकाजी के स्थान पर मानते हैं-आज भी और अपने संबंध वाला जो कोई भी होता है, उसे यही रहस्य समझा रहे हैं.... सालों बाद स्थावरतीर्थ जो योगी बापा, काकाजी को बनाना था वह बनने के साथ-साथ वे स्वयं जंगमतीर्थ बन गए......'**

प.पू. पप्पाजी के तो मुखारविंद पर आनंद छलकता दिखाई पड़ता था। आशीर्वाद बरसाते हुए भी उन्होंने सर्वप्रथम यही कहा.....**'सच में आज खूब आनंद का दिन है। काकाजी का विजयदिन मना रहे हैं। मुकुंदजीवन के हीरक महोत्सव निमित्त काकाजी का विजय दिन है.....जिस दिन काकाजी धाम में पधारे और विद्यानगर में उनका अंतिम संस्कार किया, तब गुरुजी ने जो चीख निकाली-काकाजी को धार लिया.....महाराज ने लिखा है जिसका मनन करो, उसके गुण आ जाएं। हम सब मनन करते हैं, जिसमें जुड़े हों उसका-लेकिन ऊपर से। इन्द्रियों, अंतःकरण, जीव से जो मनन-चिन्तन करे, सांगोपांग गुरु के गुण आ जाएं। गुरुजी ने काकाजी को चिरंजीव बना दिया। अखंड काकामय! दिल्ली काकाजी की मूर्ति पधरा दी मध्य मंदिर-वहां मंदिर में, बहुत शूरवीर..... काकाजी ने आशीर्वाद no doubt सबको आशीर्वाद दिए-सब को आशीर्वाद काकाजी देते थे, लेकिन झेले उसने! उनके वारिसदार बन गए-आध्यात्मिक वारिसदार बन गये.... दिनकरभाई वहाँ शिकागो में-गुरुजी यहां....काकाजी के अखंड धारक, काकाजीमय गुरुजी अनंत को संबंध देकर कल्याण करे यही अंतर की प्रार्थना और आशीर्वाद.....'**

यहाँ भी पू. मल्कानी साहेब ने अपने भाव अनूठे ढंग से व्यक्त करते हुए कहा-**'मैं प. पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को multimillion thanks कहूँगा कि ऐसा spiritual celebration arrange किया। स्वामिजी दिल्ली आए तो ऐसा बतलाया कि ऐसा विचार है कि गुरुजी का 59th Birthday हरिधाम में करेंगे। मन में बहुत ठण्डक आई....ऐसी कल्पना भी नहीं थी कि इस तरीके से spiritual function हो जाएगा.....जब दिल्ली मे कार्ड पहुँचा तो देखते ही बहुत एक अजीब तरीके से कहते हैं न कि ठण्डक कोई पहुँच जाए। मैंने उसी टाइम गुरुजी को telephone किया। मैंने कहा गुरुजी कार्ड तो बहुत सुन्दर बनाया हुआ है....गुरुजी ने बताया कि ये सब काम पू. दासस्वामी करते हैं.....कुछ मुझे 12 साल हो गए हैं- प.पू. काकाजी का एक ही टाइम दर्शन हुआ, कुछ थोड़े मिनटों के लिए। गुरुजी का पहले दिन से और अब तक मैं रोज़ का उनका programme देखता हूं या उनका जो चाल-चलन हैं सत्संगियों से -सबसे पहले उनका प्रेम-चाहे**

वो कोई छोटा हो, चाहे बूढ़ा हो, चाहे कैसा भी उसका सर्विस हो, तो प्रेम है। उनका No. 1 प्रेम है, बस.....दिल्ली के जो सत्संगी हैं, गुरुजी को जितना return से प्रेम करते हैं, उसका मैं word में explain नहीं कर पाऊँगा। गुरुजी का मैंने जैसे बताया कि no. 1 daily throughtout 24 hours- एक तो वो available हैं, all the time- ऐसा नहीं कि अभी नहीं है, अभी नहीं मिलेंगे। चाहे किसी का भी कैसा जरुरी काम पड़ जाए, सारा दिन उनका दिव्य प्रेम..... मैं उनका देखता हूँ, एक विशालता है, no complaints, always tolerant. किसी की भी कोई गलती हो जाए-हरिभक्त की भी तो tolerant ही रहते हैं। मैंने एक time दिल में ऐसा सोचा था कि मुझे गुरुजी को कोई नाम देना होता, तो मैं क्या नाम देता उनको? हिन्दी तो मैं ज्यादा जानता नहीं हूँ, मैं इनका नाम रखता 'प्यार के गंगा स्वामी' इनका जो प्यार हैं गंगा की तरह, बहता ही रहता है- never stops... He has always been tolersnt कहते हैं न divine Love is pure, not selfish. कई बार स्वामिजी समझाते थे कि साधु का कोई selfish nature ही नहीं हैं। मगर हमें समझ पड़े ना! मगर 12 साल में गुरुजी ने बात समझाई है what is divinity? what is divine Love? what is divine prayer- भक्ति क्या? भजन क्या? धून क्या?......मैं यह जरुर कहूँगा कि दिल्ली के सत्संगी इस बात को बहुत अच्छी तरीके से समझ गए हैं और अभी भी गुरुजी का यह प्रयत्न चालू है कि जो भी बात हो-भजन करो। भजन से सब उपाय होना है। वो खुद भी करते हैं और हमारे लिए भी करते हैं, मैं यह दिल से-मन से जानता हूँ.....गुरुजी के लिए जितना कहूँ वो कम है, मगर उन्होंने सही रुप से महाराज की पहचान, बड़े संतों की-गुणातीत स्वरुपों की पहचान-क्या divine Love होता है? क्या Prayer की, भजन की ताकत-वो गुरुजी ने हमें सामने-आंखों के सामने रख दी.....गुरुजी सारे समाज के लिए एक साधु तो हैं ही, मगर एक friend दे दिया-दोस्त! आज के जमाने में अगर कमी है किसी साधारण व्यक्ति को, तो वो एक दोस्त की है। जब खुशी हो और जब किसी को रोना हो तो किसी का कंधा ही चाहिए और गुरुजी is ever ready-ever availabe. कोई ऐसा time नहीं कि गुरुजी ऐसा कहें कि मेरे पास time नहीं.... in short, में क्या बोल रहा हूँ कि He is friend no. 1, philosopher तो साधु के रुप में हैं ही and a guide-spritual guide......'

समढियाला से आए पू. निर्मलस्वामिजी ने फिर अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा-**'आज हम देख रहे हैं कि इन स्वरुपों की निश्रा में आज प्रसंग जो मना रहे हैं, यह कोई गुरुजी का हीरक महोत्सव नहीं मनाया जा रहा-लेकिन गुणातीत समाज आज जो मिलकर मना रहा है, यह केवल काकाजी का हीरक महोत्सव है- गुरुजी का हीरक महोत्सव नहीं....ऐसे हीरक महोत्सव तो बहुत मनाए जाएंगे और मनाए गए हैं, पर इस हीरक महोत्सव की विशेषता कुछ और प्रकार की है.... हम यहां कोई शिष्टाचार के रुप में मना नहीं रहे, किसी को प्रसन्न करने मना नहीं रहे। पर केवल भगवान स्वामिनारायण स्वयं यहां विराजमान हो और 500 परमहंसों यहाँ अक्षरधाम में विराजमान हों, ऐसी प्रतीति तो आज हमें यहां हो रही हैं......'**

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने स्वरुपों को आशीष याचना करते हुए बात कही-**'जो उत्सव मना रहे हैं- वह आप सबके दिल की उमंग है....कोई Formality दिखाई नहीं देती। काकाजी के प्रति हमें जो भावना है, उसका एक दर्शन है.....पप्पाजी, स्वामिजी, साहेब इन लोगों को मेरे लिए कितना प्रेम है? कितना लगाव है? पत्रिका में मैंने पढ़ा-भुल्का 60 वर्ष का ! भुल्का 60 वर्ष का नहीं, भुल्का 260 वर्ष का है। 260 वर्ष का इसलिए कहता हूँ कि एक बार बापा के साथ हम जेतलपुर गए थे......बाबा एक जगह दर्शन करने खड़े थे। फिर मुझे बुला कर एक चिमटा दिखाया और पूछा- पता है किसका है? मैं कुछ बोला नहीं। सभी तो आगे चले गए, पर वह बात मेरे दिमाग में घुस गई कि वह चिमटा मुझे क्यों बताया? फिर, काकाजी से पूछा तो उन्होंने कहा कि तेरी चेतना महाराज के समय आनंदस्वामी की है। सो, तू पंजाब व उत्तर भारत में सत्संग कराएगा। आनंद मुझे यह कि आनंदस्वामी का history देखें तो महाराज ने पहले से उनको गुणातीतानंदस्वामी के जोग में रख दिया। यह महाराज की spcial favour होगी। इसी तरह आज भी ये पुरुषों ने प्रेम देकर मुझे जो निभाया, उसका मुझे आनंद है। तो आज के दिन प्रार्थना करता हूँ कि आपने तो हमारे लिए खूब किया, पर काकाजी एक बात बोलते कि 'झमूरा' बन जाओ। झमूरा यानि आपकी मर्जी को जान सकें....स्वामी, काकाजी, पप्पाजी, साहेब इन सब के पास आज यह मांगना है कि ऐसे आप के सच में अब झमूरे बन जाएं। आपको जो कराना है-कहना है इतना ही हम वर्तें या बोलें-ऐसी आज के दिन शुभाशीष दें-ऐसी प्रार्थना.....'**

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने भी यही बताया-..... **'पप्पाजी ने जैसे कहा काकाजी ने मुकुंदजीवनस्वामी के जीवन में जो अद्‌भुत घड़ाई की-उसका आज यह विजय दिन है.....'**

प.पू. साहेब ने आशीष बरसाते कहा-....' **प.पू. गुरुजी के हीरक महोत्सव निमित्त हम सब को खूब सुन्दर लाभ मिला। दासस्वामी, प्रेमस्वामी, कोठारीस्वामी ने प.पू. स्वाामजी की प्रेरणा से खूब सुन्दर सुशोभन किया है..... सभी के लिए खूब प्रेरणादायक वस्तु है......गुरुजी का जीवन हम सब को खूब प्रेरणा दे-ऐसा है.....हम सबको शुरुआत में काकाजी के साथ खूब लगाव। उन्होंने हमारे जीवन में हरिप्रसादस्वामिजी, पप्पाजी का, बा का माहात्मय गाकर आत्मीयता कराई! गुरुजी पर काकाजी इतने प्रसन्न थे-उसका दर्शन हम लोगों ने किया। दिनकरभाई, गुरुजी, कोठारीस्वामी, प्रेमस्वामी, भरतभाई, बापु ये सब-इन सब को काकाजी के साथ असाधारण लगाव था। इन सबके लिए गुरुजी को असाधारण माहात्मय है। वह काकाजी के प्रति विशेष प्रेम और काकाजी रूप हो गए, उसका लक्षण है। यह बहुत अशक्य वस्तु है। दिनकरभाई का इतना ही माहात्म्य, कोठारीस्वामी का भी इतना माहात्म्य, पप्पाजी, स्वामिजी तो उनके लिए प्रभुस्वरूप हैं। सब के लिए इतना माहात्म्य-उनकी सेवा करने की इतनी तान। यह दर्शन जब हम दिल्ली जाएं या गुरुजी यहां आए तो अनुभव करते हैं और यही उनका काकाजी के प्रति सच्चा प्रेम और काकारूप हो गए उसकी निशानी है... आज दिल्ली का समाज जो यहां आया है वह गुरुजी का सच्चा माहात्म्य है हमारे लिए। अभी देश-प्रदेश में स्वामिनारायण सम्प्रदाय प्रचिलत हुआ, वर्ना थोड़े वर्षों पहले गुजरात की सीमा के बाहर स्वामिनारायण सम्प्रदाय को कोई जानता नहीं था... ऐसे प्रसंगों में दिल्ली जाकर खड़े रहे...एक-दो बार नहीं 7 वर्ष तक लगातार.... काकाजी ने गुरुजी द्वारा शास्त्रीजी महाराज का संकल्प दिल्ली में साकार किया... स्वामिजी के प्रति उनको प्रभु का भाव, पप्पाजी के प्रति प्रभु का भाव-संतों के प्रति प्रभु का भाव, हरिभक्तों के प्रति दिव्यभाव-निर्दोषभाव यह बहुत अद्‌भुत वस्तु है.... गुरुजी bold और निखालस-उनमें कपट ज़रा भी नहीं मिले। काकाजी के ये सब गुण लेकर एक अद्‌भुत पात्र का सर्जन हुआ। अद्‌भुतभाव का उनमें दर्शन हुआ। वह गुणातीतभाव है और ऐसा गुणातीतभाव हो तो वहां प्रभु का प्रगटीकरण होता ही है और पप्पाजी, स्वामिजी भी अपरम्पार राजी हैं...बापु, दिनकरभाई, कोठारीस्वामी, गुरुजी, भरतभाई और वशी ये सब जो पात्र हैं, उसकी भेंट हमको पप्पाजी, स्वामिजी, काकाजी ने दी है। स्वामिजी की उदारता, विशालता देखें कि उनको एक दर्शन कराना है कि इतने सारे अद्‌भुत प्रसन्नता के पात्र हमारी नज़र के समक्ष में दिव्य पुरुषों ने रखे....'**

प.पू. साहेब के बाद प.पू. स्वामिजी ने आशीष बरसाई-**Man is absolutely nothing before The Supreme. मानव ऐसा कुछ नहीं है। ऐसी कोई शक्ति नहीं है। ऐसा कोई ओजस नहीं है। ऐसा कोई गुण नहीं है। ऐसा कोई सामर्थ्य नहीं है, जिससे वो प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त कर सके। आज इसलिए आप-हम सब गुरुजी को याद करते हैं... गुरुजी की प्रकृति ही बन्दर जैसी थी। वो दो-पांच मिनट एक जगह ठहर नहीं पाए ऐसा चंचल स्वभाव था। Over active, Over smart मगर उनमें एक गुण बहुत अच्छा बस ! He is beyond intelligence. बहुत कठिन चीज़ है.... प्रभु का स्वीकार करना वो सच्ची साधना है। वो प्रसंग काकाजी ने कहा-वो भी सूर्य, मैं भी सूर्य और आप भी सूर्य-अद्‌भुत बात है... जब आप लोग यहां आए हो तो एक दृढ़ ठहराव करके जाना। जैसी एक सरलता गुरुजी ने काकाजी के साथ, बापा के साथ-गुरुजी ने बापा को कहा कि मैं साधु के योग्य ही नहीं हूं। डॉ. स्वामिजी और महंतस्वामिजी और भक्तिस्वामिजी अच्छी तरह से जी रहे हैं, ऐसी मेरी लायकात नहीं है, ताकत नहीं। मैं इस जन्म में कभी ऐसे भाव से स्वधर्मयुक्त, भजनयुक्त दृढ़ता से मैं नहीं जी सकूंगा। योगीजी महाराज ने एक ही sentence में उसको जवाब दे दिया-स्वीकार लिया बस ! गुरुजी की बड़ी विशेषता ये है। योगीजी महाराज ने ऐसा ही कहा-शास्त्रीजी महाराज ने उन लोगों को दीक्षा दिया है, आपने ली, बस ! ऐसा गुण जरूर से आपको प्राप्त हो जाएगा.... यहां इतने प्रसंग हैं चार-पांच सरलता के। पप्पाजी ने गुरुजी को कहा-मैंने जो ये बात करी है आपके लिए। मान लिया, स्वामिजी ने बात किया तो मान लिया, काकाजी ने बात किया तो मान लिया.... मैं संतों को ऐसा बोलता हूं कि गुरुजी ऐसा एक बंदर कोटि में भी श्रेष्ठ बंदर-उसकी प्रकृति most चंचल- most jealous-best planner. मगर उसकी विशिष्टता इतनी अच्छी-मुझे गुरुजी के दो गुण बहुत जंचे आज भी... कुछ नहीं था मगर जिसमें था, उसको स्वीकार**

लिया। बस अप्रतिम विश्वास से... आज गुरुजी का प्रागट्यदिन। ऐसी सरलता से हम संबंध करें, संबंध वही स्वीकार, सरलता वही संबंध-पल-पल तू ही, मेरे हलन-चलन में तू ही, मेरी आंख में तू ही, मेरे कान में तू ही। हम जब तक बात सुनते हैं, तब तक तो ब्रह्मरूप ही हैं, मगर जब खाने बैठ जाएंगे भोजन के लिए तब तो कौन-सी दुनिया में होंगे? भूल जाते हैं कि शरीर के Controller प्रभु ही हैं। भगवतस्वरूप संत ही शरीर का control ले रहे हैं। उसकी स्मृति ही मेरा जीवन है। उसके सामने सरलता से स्वीकार उसका-वो मेरा जीवन है, वो ही मेरी सच्ची साधना है। तो आज जब हम आनंदोत्सव मनाने के लिए आए हैं। आत्मीयता, सुहृद्भाव-सुहृद्भाव means borderless world. सुहृद्भाव means no nature at all. सुहृद्भाव means प्रकृति से पर ऐसा एक जीवन है-ऐसा 'सुहृदं सर्वभूतानाम' भगवान कृष्ण ने अर्जुन को कहा है, सबके सुहृद् बनो। गुरुजी के प्रागट्यदिन भगवान कृष्ण, भगवान स्वामिनारायण, भगवान राम, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, साहेब, स्वामिजी सब के चरणार्विंद में एक ही प्रार्थना-वो जो प्रसंग है, उसको साथ ले जाओ बस.... 100 सालों में जितना काम नहीं होगा, एक करोड़ साल में जितना नहीं होगा, इतना काम एक मिनट और सैकण्ड में होता है.....'

इस प्रकार आत्मीयता व भक्तिभाव से भरपूर और पू. मल्कानी साहेब के शब्दों में spiritual function की पूर्णाहुति हुई.... सभी हरिभक्तों ने प्रसाद लिया....

दिल्ली में रहे प.पू. काकाजी के पुराने जोगी प.भ. आर.के. पटेल साहेब ने बड़ौदा के नज़दीक अपने गांव 'दशरथ' में नया मकान बनाया है-'आत्मीय भुवन।' काफी समय से उनकी इच्छा थी कि दिल्ली के मुक्तों व प.पू. गुरुजी जब भी गुजरात आएं, तो उनके यहां आएं। सो, 17-3-96 की शाम सारा दिल्ली व पंजाब का मुक्त समाज प.पू. गुरुजी के साथ वहां पहुंच गया... उनका भक्तिभाव देखकर सभी खूब गद्गद् हो गए। उन्होंने हर तरह की खूब अच्छी सुविधा कर रखी थी और उनके आग्रह व भाव से सभी रात उनके यहां रुके भी... दूसरे दिन सुबह 10.00 बजे हमारे राकेशभाव के साले प.भ. जयेशभाई पटेल के यहां बड़ौदा सभी पहुंच गए... वहां सभी मुक्तों प्रसाद लेकर दोपहर की सुपर फास्ट ट्रेन से दिल्ली आने रवाना हुए....

इस उत्सव में एक आश्चर्यकारक घटना बनी जिससे सभी को लगा कि मानो प.पू. काकाजी ही सब centres में प्रेरणा करके खुद अपने लाडले मानसपुत्र पू. गुरुजी की जयंती का आनंदोत्सव मनाने आए हों... प.पू. काकाजी के प्रति पू. गुरुजी की सतत् निगाह की विशेषता को लेकर दिल्ली से सूरजमुखी फूल का हार व कार्ड बनाया था... दूसरी ओर बम्बई से हरिभक्तों व पवई की साधक बहनों द्वारा बनाया गया हार व कार्ड भी सूरजमुखी का संकेत लेकर बनाया गया था। तीसरी कड़ी थी हरिधाम की-जहां पर पू. गुरुजी की जयंती की केक भी सूरजमुखी का संकेत लेकर बनाई थी... जबकि तीनों जगह पर आपस में तो इस बारे की कोई बात तक नहीं हुई थी। यूं तीनों जगह पर एक ही-प.पू. काकाजी को पसंद अन्तर की एकता का दर्शन हो रहा था। पू. वशीभाई के शब्दों में-**'कोई inner current ही काम कर रहा था....'** प.पू. काकाजी भी आज अपने इस तैयार पात्र की सभी के मुंह से तारीफ सुनकर कितने खुश हो रहे होंगे....

सच ! चारों ओर प.पू. काकाजी के विजय दिन की खुशबू हर एक को महसूस हो रही थी और प.पू. पप्पाजी तो अत्यधिक उमंग व खूब प्रफुल्लित दिखाई पड़ते थे... विद्यानगर, ब्रह्मज्योति, सांकरदा, हरिधाम सभी जगह पर एक निराली आत्मीयता का दर्शन हो रहा था। पू. गुरुजी के शब्दों में **'1969 से 1974-75 के युग का दृश्य ताज़ा हो गया....'**

पू. गुरुजी को यह आत्मीयता इतनी स्पर्श कर गई कि वापिस आकर उन्होंने सभी centres भावपूर्ण हृदय से सबको कोटी-कोटी वंदन के पत्र लिखे और खास प्रार्थना करी कि-**'ऐसी भावात्मक एकता-जिसमें सब मेरे और मैं सब का ही हूं-जिसमें कोई भेदभाव नहीं हो-अपना-पराया नहीं-हम सब एक-सरदार पटेल की भाषा में-'एक ही छावनी के सिपाही'-यह भावना हो-उसमें स्थिर रह पाएं, क्योंकि प.पू. काकाजी हमें कहते-सुहृद्भाव से वर्तना वह ब्रह्मरूप वर्तन से अधिक विशेष है..... '**

तो इस अवसर पर भगवान स्वामिनारायण व सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है कि जैसा इस उत्सव में भावात्मक एकता-आत्मीयता का दर्शन हुआ वह कायम के लिए स्थिर हो जाए.....

■

'सूरजमुखी ज्यों देखता रहे सूर्य की तरफ, जीवन है जीते, आप यों काका को देखकर...'
पू. गुरुजी की यह विशेषता को देखकर सूर्यमुखी का हार व केक अर्पण.... (हरिधाम)

स्वामी की बातें

489. कई कहते हैं कि यह तो कुछ जानता नहीं,इसे तो कुछ आता नहीं, लेकिन गद्दी पर किसने बिठाया है? उसका उसे कुछ पता भी है क्या? सब कुछ जानते हैं, तब ही गद्दी पर बिठाया है। यह तो सत्संग में कुसंग बताया। अब मोक्ष की बात करते हैं–

'एकोपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधावभृथे न तुल्यं।
दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय॥'

इस श्लोक का अर्थ किया कि–प्रगट को एक प्रणाम करने से मोक्ष होता है और यहां तो करोड़ो प्रणाम करे हैं-लेकिन तब भी मोक्ष होने की प्रतीति आती नहीं और शांति होती नहीं। परन्तु, यदि प्रगट भगवान को जानकर व पहचान कर एक प्रणाम करें, तो भगवान के धाम में जाए और मोक्ष की प्रतीति हो जाए व शांति भी हो जाए।

प्र-5,311

490. जिसे कल्याण चाहिए व घर में रुपये हों तो बाई-भाई दोनों के दो मंदिर कराना। इससे उसका कल्याण हो चुका।

प्र-5,312

491. बरसात तो भगवान बरसाते हैं, इन्द्र तो रुठा हुआ है, सो बरसता नहीं व काल भी चिढ़ा है। परन्तु दया आने से बरसात करी है।

प्र-5,313

492. पैसे में, घर में, स्त्री में और देह में माल मानना नहीं। दाने तो भगवान देंगे। वह संजोकर आयु पूरी करनी। घर में काम करने वाला हो व रुपये हो, उसे तो दाने खाकर कथावार्ता सुननी और जिसे कोई न हो उसे रेंट जोड़ कर काम करने लग पड़ना, फिर भगवान भजना। यह देह तो पानी का, पृथ्वी का, आकाश का बना है और उसमें मिल जाएगा और सभी बड़ों को एक महिना बाते सुनने यही रहना, ऐसी आज्ञा है।

प्र-5,314

493. सत्संग के नियम न पाल पाए तो तिलक नहीं करना और कहना कि मैं सत्संगी नहीं व मुझसे नियम पलता नहीं, लेकिन भगवान व साधु सच्चे हैं। यूं कहेगा उसका अंत में मोक्ष होगा, परन्तु सत्संग में रहकर शिक्षापत्री नहीं पालेगा, उसे दुःख आएगा और भगवान सुख से नहीं भजे जाएंगे।

प्र-5, 315

494. वशराम भक्त को फोड़े का अत्यधिक दुःख देखकर मुझे बुखार आ गया। फिर फोड़ा फूटा, तब सुख हुआ। यूं दया की अधिकता बताई।

प्र-5,317

495. यदि दुकाल पड़ेगा तो सत्संगी दुःखी होंगे, फिर क्या हम दाना खा पायेंगे? नहीं खा पायेंगे।

प्र-5,318

496. गय राजा जैसा राजा करना है, वह होगा, उसके बाद दो करोड़ अधिक व्यक्ति भगवान् भजेंगे व रघुवीरदास महाराज जैसे आचार्य करने हैं।

प्र-5,321

497. प्रहलाद् ने दस हज़ार साल तक नरनारायण भगवान के साथ युद्ध किया लेकिन जीत नहीं पाए, फिर नारदजी के वचन से छः महिने में भक्ति से जीत लिया।

प्र-5,322

498. म.प्र. का 9वां वचनामृत पढ़ने की आज्ञा की और बोले कि इस वचनामृत में जैसा कहा है, वैसे महाराज को पुरुषोत्तम जानेगा और सत्संग से निकल भी जाएगा तो भी अक्षरधाम में जाए व सत्संग में रहता होगा, धर्म पालता होगा तथा उर्ध्वरेतस ब्रह्मचारी भले ही होगा, परन्तु यदि महाराज को पुरुषोत्तम नहीं जानेगा, तो दूसरे लोक में जाएगा।

प्र-5,325

व्रतोत्सवसूची

1. दि. 14.4.96 रविवार एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'ANIRDESH' Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Chowdhry Mudran Kendra** 12/3, Sri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053